दादा भगवान परिवार का

जून २०२०

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

मीकु सच्चे सुख की तलाश में हैं। उस तक पहुँचने के लिए उसे रास्ते में मिलने वाले पत्र को इकट्ठा करके २१ पॉइन्ट प्राप्त करने में मदद करो। हर एक पत्र के पॉइन्ट नीचे दिए गए हैं।

=10 =0.5 =5

सुख का सही एड्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

मोबाइल गेम्स खेलते हैं, कार्टून फिल्मस देखते हैं, मम्मी-पापा के साथ होटल में खाना खाने जाते हैं, पिकनिक में जाते हैं.... इतनी मज़ा करते हैं फिर भी ऐसी मज़ा क्यों नहीं आती कि जो टिके? बोरियत क्यों होने लगती है? यह समझ में नहीं आता।

क्या आप सभी का भी यही प्रश्न है?

तो मित्रों, यह अंक ज़रूर पढ़िए। इसमें से आपको अपना जवाब मिल ही जाएगा, लेकिन साथ ही साथ सच्चा सुख कहाँ से और किस तरह मिलेगा यह भी जानने मिलेगा। तो पढ़ोगे न?

-डिम्पल मेहता

वर्ष : ८ अंक : २
अखंड क्रमांक : ८७
जुन २०२०

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2020, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

दादाजी कहते हैं....

सिद्धांत क्या कहता है कि भौतिक सुख (बाहर का सुख) और अंतर सुख का बैलेंस होना चाहिए। भौतिक सुख जैसे-जैसे बढ़ता है वैसे-वैसे अंतर सुख कम होता जाता है।

भौतिक सुख अर्थात् क्या?

- भौतिक सुख अर्थात् जो इन पाँच इंद्रियों से अनुभव में आता है।
- जीभ से, नाक से, आँख से, कान से, स्पर्श से इन पाँच इंद्रियों के सभी सुखों को भौतिक सुख कहते हैं।

भौतिक सुख किस तरह मिलते हैं?

- फर्स्ट क्लास बिस्किट खाकर तो मज़ा आ जाता है।
- नई-नई जगहों पर घूमें-फिरें, पिक्चर देखें या संगीत सुनें।
- फर्स्ट क्लास प्रेस किया हुआ ड्रेस पहना हो तो सुख लगता है।

इनर हेपीनेस अर्थात् क्या?

- यदि हमारी समझ बदल जाए तो इनर हेपीनेस मिलेगी। फिर वह हेपीनेस कभी भी नही जाएगी।

इनर हेपीनेस किस तरह मिलते हैं

- नोबल माइंड रखने से, सभी जगह एडजेस्ट हो जाने से हेपीनेस बढ़ती है।
- सामने वाला डिसएडजेस्ट होता हो फिर भी हम एडजेस्ट हो जाएँ कि मुझे नेगेटिव नहीं देखना। दुःख नहीं देना है, तो हमारी इनर हेपीनेस बढ़ती है।
- मम्मी-पापा कहें कि ऐसा नहीं करना है और उनके आनंद के लिए नहीं करेंगे, तो उनके आनंद का प्रभाव हम पर पड़ेगा और हमें अंदर से आनंद आएगा। हमारी मनमानी नहीं हुई, उसके दुःख से, उन्हें खुश रखने से जो आनंद उत्पन्न होगा न, वह अधिक होगा।

सामने वाले को सुख देने से हमारे अंदर भी सुख उत्पन्न होता ही है।

हम सुखी होने के लिए चीज़ें इकट्ठा करते हैं, जैसे कपड़ा चाहिए, जूते चाहिए, स्टाइल मारते हैं, यह सब सच्चा सुख नहीं है।

सामने वाले को सुख देना उसके बराबर एक भी उत्तम सुख नहीं है।

यह तो नई ही बात है!

पुराने समय में खेल-कूद में गिल्ली-डंडा, कंचे व गेंद से खलते थे और बहुत मज़ा आता था और अभी कम्प्यूटर गेम। इंसानों के साथ नहीं लेकिन मशीनों के साथ खेलते हैं। इस तरह बाहर से सुख लेते गए, तो अंदर के सुख कम होते गए।

अभी तो ऐसे सोते-सोते स्विच दबाते हैं तो ऐसे पर्दा गिर जाता है। स्विच दबाते हैं तो पंखा चल जाता है, स्विच दबाते हैं तो लाइट हो जाती है। वैसे तो जिम में एक घंटा पसीना बहाते हैं। और यहाँ उठकर लाइट बंद करने नहीं जाते। सोते-सोते बंद हो जाती है। घर में कोई हलन-चलन ही नहीं रहती। फिज़िकल कसरतें कम हो गई। दिमाग़ की गिनती कम हो गई। इसलिए फिर छोटा सा प्रॉब्लम आता है न, तो सोल्यूशन लाने की शक्ति खत्म हो जाती है।

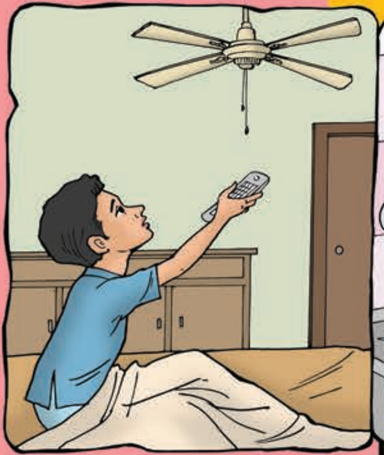

अंदर के सुख कम हो गए, इसलिए शांति से जी भी नहीं सकते। चैन नहीं पड़ता। जल्दी-जल्दी कुछ चाहिए, नया-नया चाहिए, अभी भी कुछ नया, अभी भी कुछ नया सुख चाहिए। लेकिन वास्तव में किसी में से भी सुख नहीं मिलता। और जो मिलता है, वह टिकता नहीं है फिर बेचैन हो जाते हैं। इसलिए खेलने में, खाने में, घूमने में, अलग-अलग हजारों तरीके खोज निकालते हैं। किस तरह ज़्यादा सुख मिले, उसमें ही लोग रहते हैं। और इनमें से जितना सुख लेता जाता है उतना ही अंतर सुख बंद होता जाता है। अंदर पूरा

इमबैलेन्स हो जाता है। इसलिए डिप्रेशन और टेंशन बढ़ जाता है। छोटी सी बात में अपसेट हो जाते हैं, मारामारी कर लेते हैं, झगड़ पड़ते हैं। क्योंकि अंदर जो सहन शक्ति, एडजेस्टमेंट लेने की शक्ति थी, वह खत्म हो गई है।

ज़रूरत से कम चीज़ें होती हैं तो कम पड़ जाती हैं, इसलिए एडजेस्टमेंट लेना पड़ता है। वह लेते-लेते अंदर सुख उत्पन्न होता है। जब नापसंद में एडजेस्टमेंट लेना पड़ता है तब अंदर का सुख उत्पन्न होता है। पहले गाँव में रहने वाले लोग संतोषी होते थे। उन्हें शांति रहती थी। वे लोग रात को दीपक जलाते थे, फिर लालटेन होती थी, उसे साफ़ करते थे। नहीं जलती तो पड़ी रहती थी। ऐसे ही खाना खा लेते थे और रात को भगवान का नाम लेकर सो जाते थे। शांति से जीते थे।

ब्रेवहार्ट

रूम के एक कोने में बैठी हुई शिवानी टुकुर-टुकुर अपने भाई शौर्य को देख रही थी। उसे आश्चर्य हुआ। शिवानी के मन में उठते सवालों के जवाब तो सिर्फ शौर्य के पास ही था। लेकिन अभी शौर्य के पास दीदी के सामने देखने का समय ही कहाँ था? दीदी, शौर्य को देखकर मन ही मन मुस्कुरा रही थी, "मेरे भाई के पास नाराज़ होने के तो अनेक कारण हैं। लेकिन, इस तरह और वह भी इस जगह...इतना खुश क्यों है?" भाई साहब, कल रात से ही मौनव्रत धारण करके बैठा था। और कारण बस इतना ही था कि डैडी ने उसे वीडियो गेम लाने के लिए मना कर दिया था।

"देख शौर्य, यह खर्चा मैं नहीं कर पाऊँगा। जब तुम कमाओ तब ये सभी खर्च करना," डैडी ने साफ शब्दों में कहा था।

"लेकिन डैडी, आपने मुझसे प्रॉमिस किया था कि मेरे अच्छे मार्क्स आएँगे तो आप मुझे यह वीडियो गेम दिलवाओगे। यदि आप अपने प्रॉमिस का पालन नहीं कर सकते तो आज से मेरे साथ बात मत करना।" शौर्य ने डैडी के साथ उद्धताई से बात की थी।

अंत में उसकी ज़िद से हारकर जब डैडी ने उसे वीडियो गेम के लिए पैसे दिए, तब वह, "थैंक यू, थैंक यू" कहकर डैडी के गले लग गया। लेकिन थोड़ी ही देर में उसकी खुशी थम गई, जब अचानक रूम का पंखा चलते-चलते बंद हो गया।

"ओह, नो!...इलेक्ट्रिसिटी गॉन! पावर-कट! अब कब आएगी भगवान जाने।"

शौर्य को बहुत अकुलाहट हुई। "छुट्टी के दिन पावर जाए! इससे ज़्यादा बैड लक क्या हो सकता है! वाई फाई के बिना किस तरह जीए? अब मैं अपनी वीडियो गेम किस तरह खेलूँगा? और मेरा फोन भी डिस्चार्ज हो गया है।"

"इलेक्ट्रिक पावर गया तो जैसे मैं पावर बिना का हो गया।" वह अकुलाया।

पसीने से तराबोर मम्मी किचन में से बाहर आई। "बेटा, टेक्नोलॉजी तो हमारी सुख-सुविधा के लिए है। लेकिन उसका गुलाम बनकर हमें अपना सुख-चैन खो नहीं देना है। क्या पुराने ज़माने में बिना टेक्नोलॉजी के लोग सुखी नहीं थे? अरे, ज़्यादा सुखी थे। तुझे पता है क्यों? क्योंकि उनके पास ऐसी इनर-टेक्नोलॉजी थी, जो उन्हें कोई साधन-सुविधा के बिना भी सुखी रखती थी। दादा-दादी को देखो इस उम्र में भी वे कितने स्ट्रोंग और खुश दिखते हैं। ऐसी खुशी ढूँढ निकाल।"

तभी शिवानी के फोन की घंटी बजी।

"हाँ, हाँ, देती हूँ," शिवानी ने धीरे से कहा। शिवानी ने शौर्य को फोन दिया और सामने से हर्ष ने ज़ोर से सुनाया, "क्या कर रहा है? कब से तेरा फोन स्विच ऑफ आ रहा है। चल, अब जल्दी से बिल्डिंग के नीचे आ जा।"

शौर्य को मम्मी के लेक्चर से छुटने का अच्छा चांस मिल गया।

"मेरे फ्रैंडस मुझे बुला रहा हैं। मैं जा रहा हूँ।" अकुलाकर शौर्य घर से बाहर निकल गया।

शाम को पावर तो वापस आ गया लेकिन शौर्य नहीं आया। जब हर्ष ने शिवानी को फोन करके डिसूज़ा आंटी के घर बुलाया तब शौर्य को आंटी के घर काम करते हुए देखकर शिवानी को बहुत आश्चर्य हुआ। रूम के एक कोने में बैठकर वह अपने भाई को देख रही थी। शिवानी को देखकर शौर्य उसके पास आकर बोला, “दीदी, तुझे लगता होगा कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ। राइट? बताता हूँ।”

दोपहर को मैं अपने फ्रैंडस के साथ पार्किंग प्लॉट में बैठा था। सभी अपने-अपने फोन में बिज़ी थे। उस समय मेरी नज़र डिसूज़ा आंटी पर गई। लिफ्ट के सामने वे भारी बैग्स लेकर खड़ी थीं। मेरा फोन डिस्चार्ज हो गया था और मेरे पास और कुछ करने के लिए नहीं था। मैं आंटी के पास गया।

“आंटी लिफ्ट बंद है, इलेक्ट्रिसिटी नहीं है। लाइए, आपकी बेग्स मैं ले जाता हूँ।” मैंने हाथ बढ़ाया।

“लेकिन...बेटा...” आंटी के चेहरे पर खुशी और आवाज़ में थोड़ा संकोच था।

“डोंट वरी आंटी, आई एम स्ट्रोंग।”

“अरे, मेरे ‘ब्रेवहार्ट’ कितना बड़ा हो गया है!” सालों बाद आंटी के मुंह से उनका ही दिया हुआ प्यारा नाम सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा। आंटी के घर बैग्स रखकर मैं निकल ही रहा था, तो आंटी ने मुझे रोका। “अरे, इतनी मेहनत करने के बाद यों ही चला जाएगा क्या? मैं फटाफट तेरा फेवरेट जलजीरे का शरबत बनाकर लाती हूँ।”

मैंने तो आंटी की थोड़ी सी हेल्प की थी। लेकिन इतनी सी मदद से ही आंटी इतनी खुश हो गई कि उनकी खुशी देखकर मुझे संतोष हुआ। किसी की खुशी का कारण बनना इतना सुखदाई होता है, यह मुझे पहली बार समझ में आया।

जब आंटी किचन में गई तब मेरी नज़र टेबल पर पड़े कार्ड पर पड़ी। कार्ड पर सुदंर अक्षर में लिखा था, “हेपी बर्थ डे टु माय डियरस्ट मॉम!” नीचे

देखा तो तारीख आज की ही थी।

क्या पता, क्यों मुझे लगा कि आंटी अपने बर्थडे पर अकेले ही होंगे। और बस मैंने तय किया कि आंटी के लिए बर्थडे केक लाकर, उनका बर्थडे सेलीब्रेट करते हैं। फ्रैंडस से बात की और फटाफट सब सेटिंग हो गई। इसलिए हम सभी यहाँ हैं।

"वाव शौर्य...मुझे विश्वास नहीं आ रहा कि तुझे ऐसा करने का विचार आया," दीदी ने प्रेम से कहा।

"मुझे भी कहाँ आता है!" कहकर शौर्य हँस पड़ा और फिर थोड़ा सीरियस होकर बोला, "दीदी, मुझे नहीं पता कि सुबह मम्मी किस खुशी की बात कर रही थीं। लेकिन किसी को खुशी देने से हमें भी आनंद मिलता है... वह भी बाहर के इलेक्ट्रिक पावर के बिना!"

और तेरी वीडियो गेम? क्या तूने वे पैसे इस पार्टी में... दीदी ने अपना वाक्य अधूरा ही छोड़ दिया।

"दीदी, घंटों तक वीडियो गेम खेलने के बाद मुझे कभी ऐसा आंनद नहीं आया, जैसा आज आया। रूम में बंद होकर वीडियो गेम्स खेलने से तो किसी के चेहरे पर स्माइल देखना अधिक रिफ्रेशिंग है।" शौर्य की आँखों में चमक थी।

तभी डिसूज़ा आंटी, शौर्य और शिवानी के पास आकर बैठीं। शौर्य का हाथ अपने हाथ में लेकर आंटी ने कहा, "थैंक यू ब्रेवहार्ट! आज का दिन मेरे लिए यादगार बन गया।"

"मेरे लिए भी!" कहकर शौर्य आंटी के गले लग गया।

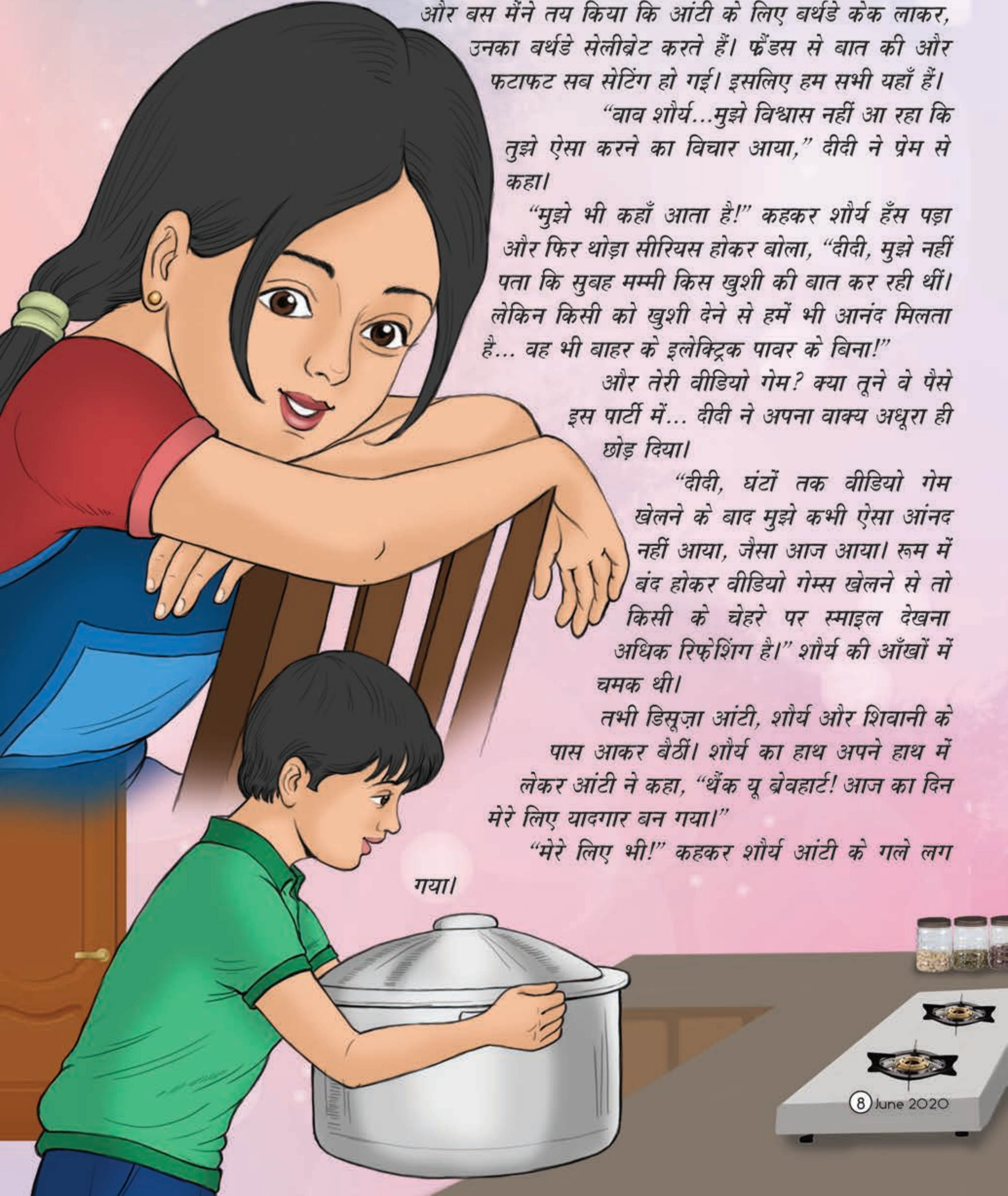

खोया है कहीं, ढूँढता है कहीं?

तभी किशन ध्रुव के लिए चाय और पोहा ले आया।
साहब, रसोई बंद कर दी है। अब मैं निकल रहा हूँ?
हाँ किशन...
ओह... अर्थात् यह ढाबा आपका है?
हाँ..मेरा नाम अर्जुन है।
अर्जुन ने ध्रुव के साथ हैंड शेक किया।
ध्रुव ने टाइम देखा।
इस समय ढाबा बंद कर देते हो? थोड़ा समय तक और खुला रखते तो..
सर, इतने समय में मेरे परिवार के लिए पर्याप्त कमाई हो जाती है।
तो बाकी के समय क्या करते हो?
बाकी के समय में मैं अपनी मनपसंद प्रवृत्ति करता हूँ और परिवार के साथ समय बिताता हूँ और आनंद करता हूँ।
अरे, यह तो बहुत बड़ी मूर्खता कही जाएगी। यदि आप अधिक समय तक ढाबा खुला रखो तो ज़्यादा कमाई कर सकते हो। और उस कमाई से और बड़ा रेस्टोरेंट ख़रीद सकते हो।
और फिर?

फिर बहुत कमाई करने के बाद बड़े शहर में रहने जा सकते हो। वहाँ बड़ा रेस्टोरेन्ट खोलकर लाखों रुपये कमा सकते हो। फिर बहुत बड़ी गाड़ी खरीद सकते हो।, बड़ा बंगला बनवा सकते हो।
और फिर?
फिर क्या? फिर तो मज़ा ही मज़ा! आप अपनी मनपसंद प्रवृत्तियाँ कर सकते हो और परिवार के साथ समय बिता सकते हो।
मैं वही सुख तो अभी भोग रहा हूँ।
अपनी सतत बेचैनी के सामने, अर्जुन की अंतर शांति और ठंडक ध्रुव को स्पर्श कर गई थी।
थोड़ी देर बाद, ध्रुव ने अर्जुन को कुछ ढूँढते हुए देखा और उसकी मदद के लिए गया।
क्या ढूँढ रहे हो?
मेरी चाबी...
थोड़ी देर ढूँढने के बाद...
आपको पक्का पता है कि यहीं खोई है?
नहीं, मुझे लगता है कि बेसमेंट में गिर गई होगी।
व्हाट? तो फिर यहाँ ढूँढने का क्या अर्थ?
बेसमेंट में अँधेरा है और यहाँ उजाला है इसलिए यहाँ ढूँढ रहा हूँ...

व्हॉट फुलिशनेस! यदि यहाँ खोई नहीं है तो यहाँ से मिलेगी कैसे?
इतने समझदार हो तो जो सुख अंदर पड़ा है उसे बाहर क्यों ढूँढते हो?
मतलब?
मतलब आप बाहर गाड़ी, बंगले में सुख ढूँढते हो। और मैं बाहर के एश आराम के बिना भी अपने सुख की मज़ा लेता हूँ।
तभी बस का हॉर्न सुनाई दिया।
थैंक यू अर्जुन। आपसे मिलकर मुझे अपने खोए हुए सुख की चाबी मिल गई।

डीकोड द मैजिकल आयना

एक दिन छोटा सा आहान अपने मम्मी-पापा के साथ एक हिल स्टेशन पर घुमने गया। वहाँ उसने एक अलग तरह का आयना देखा।

"यह आयना मुझे चाहिए ही!" आहान ने ज़िद की और हर बार की तरह मम्मी-पापा ने उसकी ज़िद मान ली।

घर आकर आहान ने उस आयने को अपने रूम के बेस्ट कॉर्नर पर रख दिया।

आयने में अपना रिफ्लेक्शन (प्रतिबिंब) देखकर आहान दंग रह गया। खुद हँसता था लेकिन आयने में उसका रिफ्लेक्शन बहुत उदास था। आहान ने उस उदास रिफ्लेक्शन को बदलने की बहुत कोशिश की। फनी फेसिस बनाए, खिल-खिलाकर हँसने की एक्टिंग की, स्माइल किया लेकिन उसके सभी प्रयत्न बेकार गए। रिफ्लेक्शन तो उदास ही रहा।

"कितना बकवास आयना है!" गुस्से में आहान ने आयने को एक कोने में फेंक दिया।

"मम्मी, मुझे पैसे दो। नया बॉल खरीदकर मैं पार्क में खेलने जाऊँगा," उस दिन दोपहर को, पैसे लेकर आहान घर से बाहर निकल गया।

रास्ते में उसने एक छोटे से बच्चे को रोते देखा। आहान उसकी हेल्प करने गया।

"क्या हुआ तुझे?" आहान ने पूछा।

"मैं खो गया हूँ। मुझे मेरे मम्मी-पापा नहीं मिल रहे है," कहकर बच्चा फिर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।

बच्चे को शांत करने के लिए आहान ने मम्मी से लिए हुए पैसे बच्चे को चॉकलेट दिलवाने में खर्च कर दिया। बहुत ढूँढने के बाद उसके पेरेंट्स मिल गए।

"थैंक यू बेटा, थैंक यू। हम कब से इसे ढूँढ रहे थे," पेरेंट्स ने आहान का उपकार माना। सभी को 'बाय' कहकर, आहान ने घड़ी के सामने देखा तो घर जाने का टाइम हो गया था।

उस दिन आहान घर वापस लौटा, तब न तो उसे खेलने मिला था और ना ही उसने बॉल खरीदा था।

जब आहान अपने रूम में गया तब एक चमकती लाइट दिखी। देखा तो जिस कोने में आयना फेंका था, वहाँ से लाइट आ रही थी। आयने को सीधा करके देखा तो लाइट उसके खुद से ही आ रही थी। उस दिन आहान बहुत ही खुश था और खुशी की किरणें अंदर से निकल रही थीं।

आयने में उसका रिफ्लेक्शन भी अत्यंत आनंदित था।

अचानक, आयने में से एक आवाज़ आई। आयने ने आहान से तीन वाक्य कहे...

उस दिन आहान को समझ में आया कि मैज़िकल आयना तो सिर्फ इनर हेपीनेस ही रिफ्लेक्ट करता है।

आयने के कहे हुए वाक्य, नीचे छुपे हुए हैं। तो चलिए, नीचे दी गई टाइल्स में लिखे शब्दों को लगाकर, आयने के कहे हुए तीन वाक्य ढूँढ निकालें और ऊपर खाली जगह में लिखें।

1) हमारे अंदर भी | सुख देगें तो हम | सुख उत्तपन्न होगा | यदि सामने वालें

2) पर उनमें सच्चा सुख नही है | चीजों को इकट्ठा करते हैं | हम सुखी होने के लिए

3) खुश करने से | नही है | कोई भी | उत्तम सुख | सामने वाले को | अच्छा और

चलो खेलें...

१ नीचे दिए गए माचिस की तीलियों में एक माचिस की तीलि जोड़ें जिससे समीकरण का हल हो जाए।

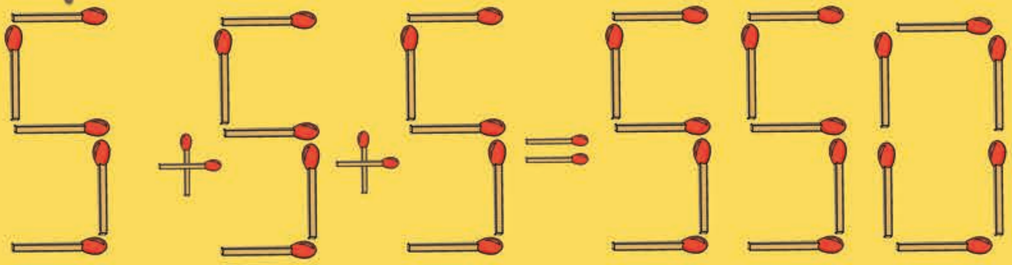

२ नीचे दिए गए प्रश्न को हल करें।

उदाहरण - to + ne = Phone

१) **- t = ?**

२) **- er + ch = ?**

३) **- ne + te = ?**

३

दिए गए चित्र में से १२ छुपे हुए चित्र को ढूँढें।

४

नीचे दिए गए चित्र में अंतर ढूँढो।

ऐतिहासिक गौरवगाथा

राजपुर नगर में मारिदत्त नामक राजा था। वह सारे दिन मदिरापान (शराब पीता) और एशआराम में ही समय निकाल देता था। वह धर्म में सिर्फ अपनी कुलदेवी चंडमारी को पूज्य देव की तरह मानता था। और उनके आगे अनेक जीवों का वध करके देवी को अर्पण करने में धर्म समझता था।

नवरात्री का दिन आया। देवी के भक्त देवी मंदिर में इकट्ठे हुए। राजा पूजा करने के लिए आए। हज़ारों जीवों को बली चढ़ाने के लिए तैयार किया गया था।

यह देखकर राजा बोले, 'सेवकों! इस पूजन के लिए बत्तीस लक्षण वाले मनुष्य युगल (दो जन) चाहिए। वह जब तक नहीं मिलेंगे, तब तक यह सब सामग्री अधूरी मानी जाएगी। इसलिए जाओ और कहीं से भी उन्हें पकड़ लाओ।'

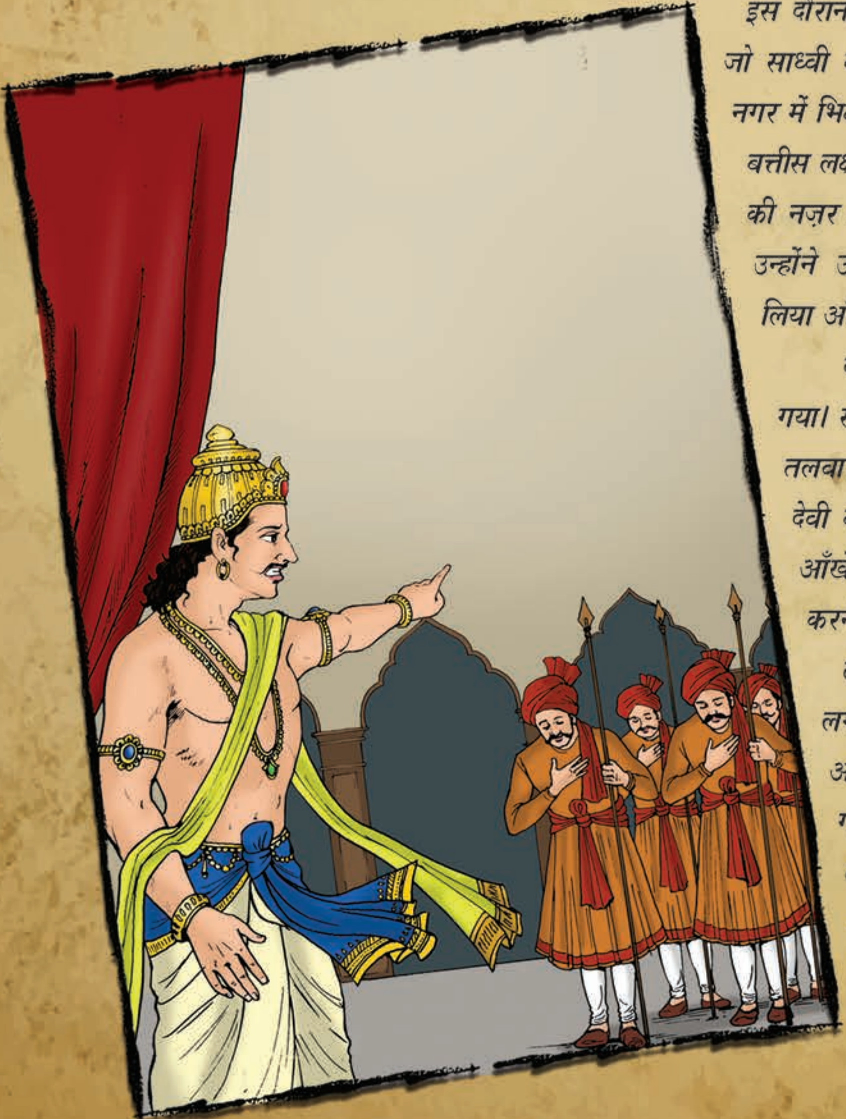

इस दौरान मुनि अभयरुचि और उनकी बहन जो साध्वी बन गई थीं, वह अभयमती साध्वी नगर में भिक्षा लेने निकले थे।

बत्तीस लक्षणा पुरुष को ढूँढते हुए राज सेवकों की नज़र इन दोनों भाई-बहन मुनि पर पड़ी। उन्होंने उन्हें बत्तीस लक्षणा मानकर पकड़ लिया और राजा के सामने हाज़िर किया।

दोनों को होमकुंड के आगे लाया गया। सामने राजा खड़े थे और दूसरी ओर तलवार, भाला और दूसरे खुले शस्त्र लेकर देवी के भक्त खड़े थे। साधु और साध्वी आँखें बंद करके पंच परमेष्टि का स्मरण करने लगे।

तभी अचानक पृथ्वी थरथर काँपने लगी। आकाश में ज़ोरदार आँधी आई। आकाश चारों ओर से रेत से भर गया! क्षण में तो कुदरत में ऐसा तांडव हुआ कि 'बचाओ, बचाओ' की आवाज़ें चारों ओर से आने लगीं। किसी की छत उड़ गई,

किसी का घर गिर गया। यह देखकर राजा और देवी के भक्त घबरा गए।

राजा मन में सोचने लगे, 'बलिदान के लिए लाए गए स्त्री पुरुष कोई दैवी महात्मा लग रहे हैं। उनके प्रभाव से ही कुदरत में यह सब बदलाव हुआ है। यदि मैंने उन पर हाथ उठा दिया होता तब तो मैं और मेरी प्रजा, सभी उनके हाथ से ही मृत्यु प्राप्त करते।'

राजा दोनों हाथ जोड़कर उनके पास गए और विनयपूर्वक बोले, 'महात्मा, आप कौन. हैं? मेरा अपराध क्षमा करो। मैं आपका सत्कार करता हूँ। महात्मा, मैं आपको मारना नहीं चाहता। मैं आपको पहचानना चाहता हूँ।'

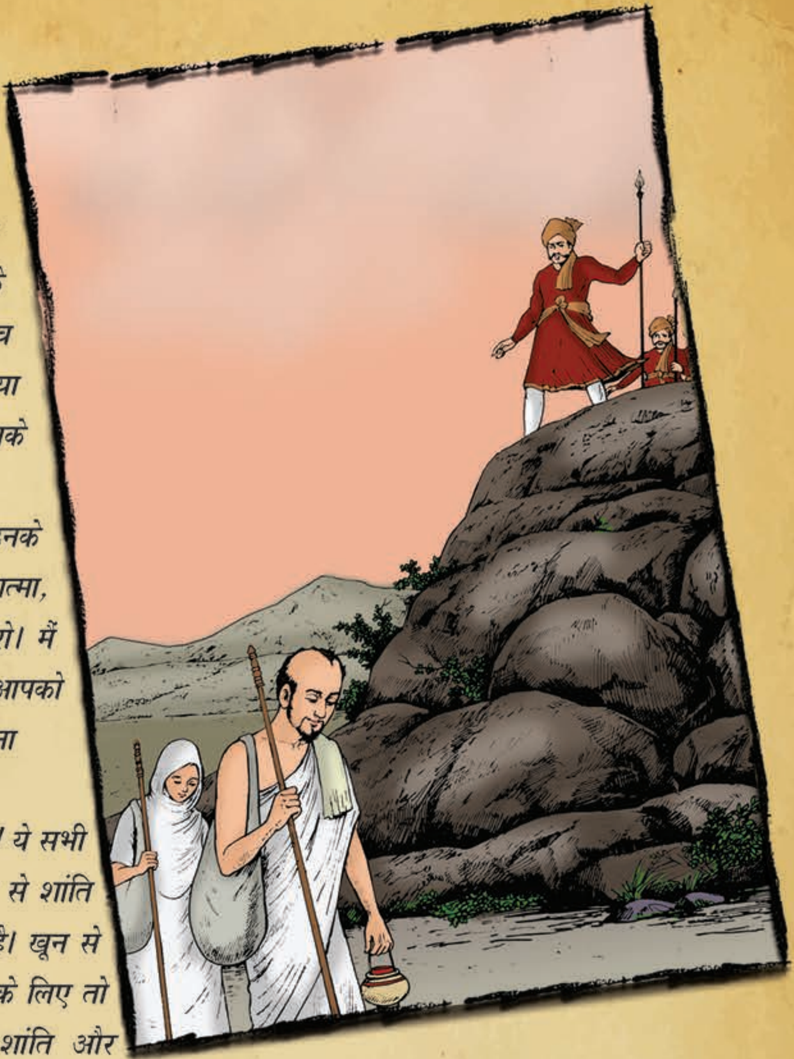

अभयरुचि मुनि बोले, 'राजन! ये सभी जीव हैं वैसे ही मैं हूँ। राजन! बलिदान से शांति की इच्छा रखना, वह वास्तव में भ्रम है। खून से हाथ धोने से हाथ साफ नहीं होते। उसके लिए तो निर्मल जल ही चाहिए। इसी तरह शांति और कल्याण के लिए हिंसा नहीं की जाती। कल्याण के लिए कल्याणकारी कार्य चाहिए।'

मारिदत्त स्तब्ध होकर सुन रहा था।

'मारिदत्त, जब मैं आपका यह व्यवसाय देखता हूँ, तब मुझे अपने पिछले जन्म दिखते हैं। मैंने अपने पिछले जन्म में सिर्फ एक आटे का मुर्गा बनाकर, उसे काटकर देवी को अर्पण किया था। उसकी वजह से मुझे अनेकों जन्म लेने पड़े हैं। उन सभी दुःखों को आज याद करने से ही मुझे कपकपी आ जाती है। जबकि आप तो हज़ारों जीवित जीवों का संहार करते हो। आपका क्या होगा? मैंने हिंसा का दुःख अनुभव किया है। आप यदि मेरे दृष्टांत से नहीं रुकोगे तो आपके दुःख की सीमा कहाँ जाकर रुकेगी?'

मारिदत्त का मन परिवर्तित होने लगा। वे बोले, 'मुनि! मुझे आपकी बात विस्तार से कहकर सच्चे मार्ग पर लाइए।'

मुनि ने अपने पिछले जन्म सुनाना शुरू किया...

-क्रमशः

मीठी यादें

नीरू माँ एक बार सिमंधर सिटी में मॉर्निंग वॉक कर रही थीं। वे एक महात्मा के घर के पास से जा रही थीं। वह महात्मा तब बाल्कनी में बैठकर ज़ोर-ज़ोर से चरणविधि कर रहे थे। नीचे चलने वाले सभी को उनके शब्द सुनाई दे रहे थे।

वहाँ से निकलकर नीरू माँ आगे गए। पूरा राउंड करके वापस लौटते समय नीरू माँ फिर से महात्मा के घर के पास से निकले।

वे महात्मा तब चरणविधि का अंतिम वाक्य बोले कि 'केवल एक आपकी ही कृपा का अभिलाषी हूँ।'

यह सुनकर नीरू माँ रास्ते पर ज़ोर से बोले कि 'आओ नीचे, कृपा दूँ।'

यह सुनकर वे महात्मा तो खुशी से इतना उछल पड़े कि तुरंत ही छलांग मारकर नीरूमाँ के पास आ गए और उनके चरणों में गिर गए।

और नीरूमाँ ने तब उन महात्मा की इतनी अद्‌भुत विधि की। उन महात्मा को और देखने वाले सभी को नीरू माँ के प्रति अहो, अहो हो गया!

पूज्यश्री के ६८ वे जन्मदिवस के अवसर पर, सेन्टरों के बच्चों द्वारा अपने-अपने घरों पर मनाए गए उत्सव की एक झलक

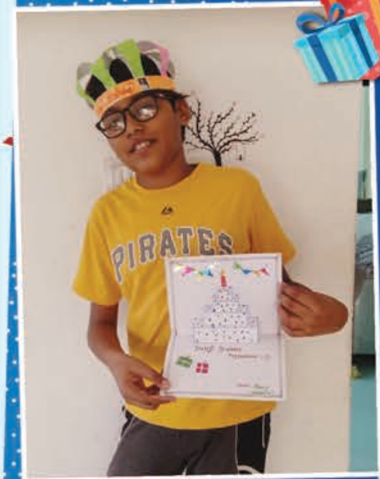

पज़ल के जवाब

1) 545+5=550

2) table, watch, plate

3)

4)

डीकोड द मॅजिकल आयना:

१) यदि हम सामने वालों सुख देगें तो हमारे अंदर भी सुख उत्तपन्न होगा।
२) हम सुखी होने के लिए चीजों को इकट्ठा करते हैं पर उनमें सच्चा सुख नहीं है
३) सामने वाले को खुश करने से अच्छा और कोई भी उत्तम सुख नहीं है

Akram Express
June 2020
Year : 8, Issue : 2
Conti. Issue No.: 87

BALVIGNAN

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

8th July

हमारी प्यारी

नीरू माँ का ज्ञान दिन

आपको लगेगा कि अभी तो जून महीना चल रहा है, तो अभी से! हाँ, हमें नीरू माँ के ज्ञान दिन के महोत्सव की तैयारी करनी है। तो हो न सभी तैयार!!!

१) नीरू माँ की याद रहे, ऐसा किसी भी प्रकार का क्राफ्ट (फोटोफ्रेम, रूमाल, पेन स्टेंड आदि)
२) नीरू माँ के लिए कोई यादें लिखी जा सकती है।
३) नीरू माँ का ड्रॉईंग (स्केच) किया जा सकता है।

उपर्युक्त में से आप जो भी करें उसका फोटो क्लिक करके हमें भेजना मत भूलना।
akramexpress@gmail.com

मार्च २०१२

दिसम्बर २०१९

इसके उपरांत नीरू माँ से सँबधित क्वीज 1ST July की https://kids.dadabhagwan.org/fun-zone/games-corner/ पर मिल जाएगी। उसके साथ ही उसमें दो अक्रम एक्सप्रेस अंक के कुछ अतिरिक्त प्रश्न मिलेंगे। तो देखो यह क्वीज और बन जाओ

क्वीज चेम्पियन।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेवल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर स्रूस करें।
१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.,** २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025